REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

वर्तमान वैश्विकरण के दौर में पर्यावरण संरक्षण में मीडिया की जिम्मेदारी

Mr. Nand Kishor Uraon[1] and Dr. Prabhakar Pandey[2]
[1]Research Scholar- Commerce , Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur (C.G.)
[2] HOD- Commerce , Dr. C. V. Raman University, Kota Bilaspur (CG).

सारांश

इस धरा पर अभी तक न जाने कितनी सभ्यताएं उदित हुई और खत्म हो चुकी है इसका विवरण मानव जीवन में नहीं पता चला। पर्यावरण प्रदूषण के कारण सामाजिक वातावरण में जहर धुल रहा है। जिससे बचाव में मीडिया अपना अहम योगदान कर रही है।

मीड़िया का वह चाहे जो भी माध्यम हो, पर्यावरण प्रदूषण से बचाव और उसके खिलाफ जागरूक करने के लिए परंपरागत माध्यमों आदि के द्वारा ग्रामीण इलाको आदि में अशिक्षित जनता को जागरूक करने की कोशिश प्राचीन समय से चल रहा है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण से बचाव के लिए टीवी चैनलों और रेड़ियों पर समय–समय पर जनहित से जुड़े विज्ञापन आदि के माध्यम से प्रदूषण के खिलाफ लोगों को जागरूक करने का काम मीडिया करती आ रही है।

शब्दकुंजी : वर्तमान, मीडिया, पर्यावरण, संरक्षण, जिम्मेदारी.

प्रस्तावना

वर्तमान से कुछ वर्ष पूर्व जब कभी पर्यावरण संरक्षण की बात हमारे दिलो–दिमाग पर आती थी, तो लोगों के मन –मस्तिष्क पर ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण की समस्या से निदान पाने की बात चलती रहती थी, लेकिन वर्तमान वैश्विकरण के दौर में जब विकास की अंधी दोड़ ही सभी देशो के लिए आवश्यक हो गया है, तो पर्यावरण संरक्षण की बात के वक्त प्रदूषण की समस्याएं बहुत ही जटिल हो चुकी है। आज हमारे सामने पर्यावरण प्रदूषण के तौर पर ग्लोबल वार्मिंग और पटाखों के साथ उत्तर भारत में पराली जलाने की समस्या प्रदूषण को बढ़ावा देने में आम हो चली है। अगर हम वर्तमान में भारत के परिदृश्य में पर्यावरण प्रदूषण से निजात के बारे में विचार करते है तो हमें दीपावली के वक्त जलने वाले ज्वलनशील और खतरनाक पटाखों पर रोक के लिए सोचना आज के परिदृश्य में आवश्यक हो चला है।

शोध के उद्देश्य

पर्यावरण प्रदूशण से बचाव में मीडिया का योगदान

पर्यावरण

पर्यावरण के अंतर्गत हम जीव–जंतु, पहाड़, जल, वायु, प्रकाश आदि को शामिल कर सकते है। जो मानव जीवन के साथ–साथ इस धरा पर निवास करने वाली सभी प्राणियों के लिए आवश्यक है। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 में पर्यावरण को पारिभाषित करते हुए कहा गया कि पर्यावरण में एक तरफ पानी, वायु और भूमि उनके मध्य

अंत अंतः संबंध होते है और दूसरी तरफ मानवीय प्राणी, पेड़–पौधे आदि होते है। भारत के प्राचीन काल में ही कौटिल्य द्वारा पर्यावरण संरक्षण की बात कही गई थी।

पर्यावरण संरक्षण में मीडिया की भूमिका

देश में करोड़ो रूपये विस्फोटक ज्वलनशील पटाखों आदि पर उठा दिए जाते है, जो प्रदूषण के लिए अहम जिम्मेदार होते है। इन पैसों का उपयोग अगर दिल्ली जैसे प्रदूषित शहर क निर्मल बनाने में किया जाएं, तो स्वच्छ वायु में सांस लिया जा सकता है। लोगों की सोच में खोट होने की वजह से देश में पर्यावरण की स्थिति में परिवर्तन नहीं हो पा रहा है। इन पटाखों में विषैले रसायन और सीसा आदि होता है, जो पर्यावरण में धुलकर वातावरण को प्रभावित करने का कार्य कर रहे है। दिल्ली जैसे क्षेत्रों में प्रदूषण की वजह पटाखे ही खेतों की पराली जलाने और मोटर वाहन आदि भी बराबर रूप से जिम्मेदार कहे जा सकते है। खेत की पराली जलाने के मामले में उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और पश्चिम बंगाल देश के लिए नासूर साबित हो रहे है।

परंपरागत मीडिया

परपंरागत मीडिया ग्रामीण और आदिवासी समाज के बीच सीधा संवाद का काम करती है। इस माध्यम में कठपुतली नौटंकी, लोक नृत्य, नुक्कड़ नाटक आदि आते है। इन माध्यमों के द्वारा उन क्षेत्रों में आसानी से पर्यावरण के प्रति जागरूकता के संदेश प्रचारित किए जा सके जहां पर आधुनिक संसाधनों की पहुंच अत्यंत कम है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति भारत में लगातार प्रयास किए जा रहे है। समय–समय पर मीडिया ने जनमानस द्वारा किये जा रहे आंदोलनों को प्रमुखता से अपने संस्थानों में स्थान दिया है जिसके वजह से ही ये आंदोलन पर्यावरण संरक्षण के लिए एक मील का पत्थर साबित हो पाये और लोग पर्यावरण के प्रति सजग हो सके, इन आंदोलनों में चिपको आंदोलन, टेहरी बांध आंदोलन, मूक घाटी आंदोलन और भोपाल गैस त्रसादी आंदोलन प्रमुख है।

प्रिंट मीडिया

वर्तमान दौर में बढ़ती वैश्विकरण के दौर में जिस तरीके से पर्यावरण प्रदूषण की समस्या तेजी से बढ़ती जा रही है, उससे बचाव और जागरूक करने का काम प्रिंट माध्यम अच्छी तरीके से निभा रहा है। भारत जैसे देश में बिजली के अभाव में गरीबी के कारण अभी भी दूर दराज के क्षेत्रों में टेलीवीजन और इंटरनेट की पहुंच न होने के कारण पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में प्रिंट मीडिया अपना अहम योगदान दे सकता है। जिस पर वह शत–प्रतिशत खरा उतरते हुए विज्ञापनों लेखो, पोस्टरो और पर्यावरण विद् से साक्षात्कार लेकर पर्यावरण प्रदूषण से समाज और देश को बचाने के लिए आहवन करते रहते है। प्रिंट माध्यम के द्वारा ही पेड़ लगाओं, पर्यावरण बचाओं आदि के प्रति लोगों को प्रोत्साहित करने का काम करते है। गांव कनेक्शन जैसे अखबारों ने इस कडी में एक बड़ा काम किया है। अखबार विगत सालों में लोगों के बीच पर्यावरण और जुडें मुद्दो को प्रमुखता से उठाने में अहम भूमिका निभाई है। मई 2000 में हुई पत्रकारों की एक संगोष्ठी में पर्यावरण जागरूकता का मुद्दा फिर से तूल पकड़ा और पर्यावरण निरक्षता के उन्मूलन पर चर्चा हुई और सरकार कई कडे कदम उठाने पर मजबूर कर दिया।

सोशल मीडिया

साल 2016 से अमेरीका को पीछे छोडते हुए भारत, चीन के बाद दूसरा इंटरनेट उपयोगकर्ता है। 2020 तक भारत में इंटरनेट उपयोग करने वाले लोगों की संख्या 73 करोड़ होने का अनुमान है। साथ ही साथ सोशल मीडिया के उपयोग में भी हम पीछे नहीं है। कुल इंटरनेट उपयोगकर्ताओं का 87 प्रतिशत सोशल मीडिया पर एक्टिव रहता है। ऐसे में सोशल मीडिया पर पर्यावरण से जुडी चर्चा और ग्रुप बहुतायत रूप में अस्तित्व में है। पर्यावरण प्रदूषण के विकराल रूप लेने के साथ ही उसके खिलाफ जन चेतना जलाने और जागरूकता फैलाने के क्षेत्र में सोशल मीडिया भी पीछे नहीं रहा है। वह भी पर्यावरण और प्रदूषित होते पारिस्थितिक तंत्र को बचाने के लिए मुहिम चलाने का कार्य कर रहा है। सोशल मीडिया के साथ इंटरनेट पर तमाम तरीके के ऑनलाईन न्यूज पेपर और वेबसाइट जैसे कि ग्रीन है किरण है, जो खरतनाक हो रहे प्रदूषण के खिलाफ लोगों

को जाग्रत कर रहा है कि वह स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी बातों से जुडकर देश और समाज की जनता को खुशहाल जीवन प्रदान कर सके। सोशल मीडिया में एम. स्वास्थ्य जैसे एप उपलब्ध है जो मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण की समस्याओं के प्रति समपति होकर लोगों को बचाव का काम करता है।

टेलीवीजन

दूरदर्शन अपने शुरूआती दौर से ही समाज को शिक्षित करने के साथ वातावरण को प्रभावित करने वाले कारकों के बारे में जनता को अवगत कराता आ रहा है। स्टार प्लस पर सत्यमेव जयते कार्यक्रम के द्वारा समाज में पर्यावरण प्रदूषण से होने वाली समस्याओं से जनता को बताया गया है। टेलीवीजन का पर्यावरण की समस्या से निपटने का प्रयास वास्तव में सराहनीय है। वह समय पर ऐसे प्रोग्राम प्रस्तुत करता रहा है जिससे लोगों में पर्यावरण प्रदूषण से होने वाली व्याधियों से अवगत कराया जा सके। टेलीवीजन ने कचरे और अपशिष्ट प्रबंधन, सामाजिक वानिकी, जल संरक्षण का मुद्दा हमेशा से उठाती आ रही है। आज वर्तमान दौर में विश्व के सामने ग्लोबल वार्मिंग की समस्या विकट स्थिति में नजर आ रही है। 2014 में ग्लोबल वार्मिंग प्रभाव के कारण उत्तराखं डमें हुए भयावह तबाही की खबर मीडिया ने दिखाई थी। और ऐसी रिपोर्ट प्रकाशित की अगल ग्लोबल वार्मिंग से निपटने की दिशा में उचित कदम नहीं उठाया जाता है, तो उत्तराखण्ड की भांति ही आने वाले समय में लगभग सभी पहाडी और तलहटी क्षेत्र में अपना अस्तित्व खो देंगे। फिल्में समाज का दर्पण होती है। उसी तर्ज पर काम करते हुए विभिन्न डायरेक्टरों ने पर्यावरण प्रदूषण के खिलाफ लोगों का ध्यान खिंचने के लिए तमाम डॉक्यूमेंट्री फिल्मों आदि का निर्माण किया जा चुका है और यह दौर जारी है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण जागरूकता के क्षेत्र में 20 वी सदी के शुरूआत के समय से ही मीडिया अपना योगदान दे रही है। रूसी मीडिया के क्षेत्र में हरियाली के लिए गिल्ड के द्वारा दिया गया योगदान सराहनीय माना जा सकता है। 1996 में गिल्ड द्वारा पर्यावरण के विरूद्ध रूसी जनता को जागरूक करने के उद्देश्य से पत्रकारिता के क्षेत्र में एक ऐसी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें के पर्यावरण मुद्दे और पारिस्थितिक तंत्र को लेकर विशेष कवरेज किया गया था।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

इलेक्ट्रानिक मीडिया के क्षेत्र में टेलीवीजन, रेडियो, फिल्म आदि को शामिल किया जा सकता है। रेडियो के माध्यम से शिक्षा, सूचना और मनोरंजन का प्रसारण होता है। इसके जरिये सामान्य जन जागरण तक पर्यावरण, पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण शिक्षा आदि का प्रसारण समय पर किया जाता रहता है। पेड़ लगाओं अभियान आदि की जन जागरूक जानकारियों की जानकारी से लोगों को अवगत कराया जाता रहता है। भारत में मुम्बई में रेडियों क्लब द्वारा जून 1923 में प्रथम बार प्रसारण हुआ। आकाशवाणी अपने लोगों आकाशवाणी, लोक वाणी, जनवाणी के मुताबिक लोगों को शिक्षित करने के साथ समय–समय पर पर्यावरण प्रदूषण से होने वाली हानि के बारे में बताकर लोगो का ज्ञान बढ़ाने का कार्य करता है। वर्तमान समय में रेडियो पर्यावरण संरक्षण, उसकी नीतियों से जनता को अवगत करने का काम तेजी से करती आ रही है।

निष्कर्ष

यह कहा जा सकता है कि संचार क्रांति के आने के बाद से पर्यावरण प्रदूषण से बचाव में मीडिया का योगदान काफी सराहनीय रहा है। जैसे–जैसे संचार के नये – नये आयाम विकसित हो रहे है, लोगों में विचारों और ज्ञान का प्रवाह करने में आसानी होती जा रही है। इसी तरह पर्यावरण संरक्षण के प्रति भी लोगों को सचेत करने में मीडिया अपनी जिम्मेदारी को भलीभांति ढंग से अदा कर रही है।

संदर्भ

(1) Patel, K. (2017] 01 01). Lok Sabha 2014, Narendra Modi and Social Sites, International Journal of Recent Advances in Psychology & Pschotherapy, 01 (01), Retrived 02 27, 2019
(2) PTI. (2019, 03 06). Internet users in India. Retrieved from economictimes. India times.com

Mr. Nand Kishor Uraon
Research Scholar- Commerce , Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur (C.G.)